इश्क़

ऐ इश्क़ तेरे चर्चे जो मैं सुनती हूँ दिन रात यहीं

तू चढ़कर मजनूं की जबाँ पर भी बोला था कभी

बस इतना तू बता दे आज भी तू है क्या कहीं

हर शख्स की जब़ान पर तेरा नाम चढ़ा यहीं

क्या तू सच में है या है तेरा केवल आभास कहीं

तेरा नाता हुस्न से था या सीरत से भी था कहीं

था गर हुस्न से तो फिर तू स्थायी था ही नहीं

गर तू होता स्थायी तो हुस्न भी होता स्थायी

गर तू था सीरत से, तेरे चर्चे सीरत से क्यों नहीं

क्यों होती है चर्चा तेरी हुस्न के साथ ही यहीं

ऐ इश्क़ सब इस कदर दम भरते हैं तेरा ही यहीं

पर तू है किसी किसी के लफ्जों में यहीं कहीं

बाकी क्यों शोर मचाते हैं यूँ ही तेरे नाम का यहीं

तोहमतें लगाते हैं,कहते हैं इश्क़ को बेवफा कहीं

यही इश्क़ है या फैला है सब तरफ तेरा भ्रम यहीं

यदि भ्रम है तो फिर तू दूर होता क्यों नहीं

अनीता सिंह ‘अनित्या'

Anita Singh ‘anitya ‘